रिपोर्ट

"सतत भारत के लिए वन-आधारित प्राकृतिक रेशे एवं प्राकृतिक रंग आधारित हथकरघा नवाचार"

वन-आधारित प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंगों की संभावनाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा हथकरघा क्षेत्र में इनके मूल्य संवर्धन एवं उपयोग की संभावनाओं का पता लगाने के उद्देश्य से **19 अगस्त 2026** को **बुनकर सेवा केंद्र, चमोली** के सहयोग से "**सतत भारत के लिए वन-आधारित प्राकृतिक रेशे एवं प्राकृतिक रंग आधारित हथकरघा नवाचार** " विषय पर एक वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों , शोधकर्ताओं, बुनकर सेवा केंद्र के प्रतिनिधियों तथा हथकरघा क्षेत्र से जुड़े विभिन्न हितधारकों ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ **भा.वा.अ.शि.प.-वन अनुसंधान संस्थान (FRI), देहरादून के विस्तार प्रभाग** की गतिविधियों एवं अनुसंधान पहलों के संक्षिप्त परिचय के साथ हुआ। **डॉ. चरण सिंह, वैज्ञानिक-जी एवं प्रमुख, विस्तार प्रभाग, FRI** ने संस्थान द्वारा संचालित विभिन्न विस्तार गतिविधियों की जानकारी दी तथा वानिकी के क्षेत्र में विकसित महत्वपूर्ण अनुसंधान प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंगों से संबंधित प्रौद्योगिकियों , वन-आधारित जैवभार से इनके संभावित स्रोतों तथा हथकरघा क्षेत्र में इनके उपयोग एवं मूल्य संवर्धन की संभावनाओं पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि उपयुक्त तकनीकी हस्तक्षेपों के माध्यम से स्थानीय रूप से उपलब्ध वन संसाधनों को मूल्यवर्धित उत्पादों में परिवर्तित किया जा सकता है, जिससे आजीविका सृजन एवं सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलेगा।

कार्यक्रम का उद्घाटन **मुख्य अतिथि श्रीमती ऋचा मिश्रा, भा.व.से., निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून** द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में श्रीमती मिश्रा ने प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंगों के सतत स्रोत के रूप में वन जैवभार के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने उपयुक्त प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, नवाचार एवं बाजारोन्मुखी दृष्टिकोण के माध्यम से हथकरघा क्षेत्र में इन नवीकरणीय संसाधनों के अधिकाधिक उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि वन-आधारित कच्चे माल के उपयोग से सतत आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के साथ-साथ सिंथेटिक रेशों एवं रासायनिक रंगों के पर्यावरण-अनुकूल विकल्प विकसित किए जा सकते हैं।

श्री तपन शर्मा, उप निदेशक, बुनकर सेवा केंद्र, चमोली ने बुनकरों एवं हथकरघा क्षेत्र से जुड़े अन्य हितधारकों के लाभार्थ केंद्र द्वारा प्रदान की जा रही विभिन्न गतिविधियों एवं सेवाओं की

जानकारी साझा की। उन्होंने बुनकर सेवा केंद्र द्वारा बुनकरों को तकनीकी सहयोग , क्षमता निर्माण, डिजाइन विकास , कौशल उन्नयन तथा अन्य सेवाएं प्रदान करने में निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने हथकरघा उत्पादों में वन-आधारित प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंगों को बढ़ावा देने के लिए वानिकी संस्थानों के साथ सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की।

इसके पश्चात **FRI के वैज्ञानिकों डॉ. वी. के. वार्ष्णेय, डॉ. एस. एस. बिष्ट , डॉ. अनीता तोमर एवं डॉ. देवेंद्र कुमार** तथा हथकरघा क्षेत्र के प्रतिनिधियों/बुनकरों के बीच एक संवादात्मक चर्चा आयोजित की गई। चर्चा के दौरान प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंगों की उपलब्धता , प्रसंस्करण, गुणवत्ता, मानकीकरण एवं उपयोग के साथ-साथ विपणन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। प्रतिभागियों ने मूल्य संवर्धन , उत्पाद विविधीकरण, बेहतर डिजाइन, तकनीकी हस्तक्षेप एवं बाजार संपर्क विकसित करने की संभावनाओं पर भी चर्चा की , ताकि वन-आधारित प्राकृतिक रेशे एवं प्राकृतिक रंग उत्पादों के आर्थिक मूल्य को बढ़ाया जा सके।

सेमिनार में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि वन-आधारित प्राकृतिक रेशे एवं प्राकृतिक रंग **सतत वन संसाधन उपयोग , हरित उद्यम विकास , पारंपरिक हथकरघा प्रथाओं तथा ग्रामीण आजीविका सृजन** के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य कर सकते हैं और इस प्रकार **सतत एवं आत्मनिर्भर भारत** के दृष्टिकोण को साकार करने में योगदान दे सकते हैं। कार्यक्रम में संस्थान के **समूह समन्वयक (अनुसंधान), श्री डी. पी. खली** की गरिमामयी उपस्थिति भी रही।

वर्चुअल सेमिनार में **भा.वा.अ.शि.प. एवं FRI के अधिकारियों , वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों , भा.वा.अ.शि.प. के अन्य संस्थानों के प्रतिनिधियों , विद्यार्थियों, उद्यमियों, गैर-सरकारी संगठनों (NGOs), स्वयं सहायता समूहों (SHGs), बुनकर समूहों** आदि सहित कुल **50 प्रतिभागियों** ने भाग लिया।

सेमिनार का समापन **FRI के वैज्ञानिकों, बुनकर सेवा केंद्र, चमोली, बुनकरों एवं अन्य हितधारकों के बीच सहयोग को और सुदृढ़ करने** तथा वन-आधारित प्राकृतिक रेशों एवं प्राकृतिक रंग आधारित हथकरघा नवाचारों के क्षेत्र में अनुसंधान , प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, मूल्य संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के साथ हुआ।

FRI, देहरादून की संयुक्त टीम, जिसमें **डॉ. वी. के. वार्ष्णेय, डॉ. चरण सिंह, डॉ. एस. एस. बिष्ट, डॉ. अनीता तोमर एवं डॉ. देवेंद्र कुमार** सहित संस्थान के कर्मचारियों ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया, ने सेमिनार को सफल बनाने में सराहनीय योगदान दिया।

Report of Virtual Seminar on

"Forest-Based Natural Fibre and Natural Dye-Led Handloom Innovation for Sustainable India"

A virtual seminar on "*Forest-Based Natural Fibre and Natural Dye-Led Handloom Innovation for Sustainable India*" was organized on 19 August 2026 in collaboration of Weavers Service Centre, Chamoli with the objective of creating awareness about the potential of forest-based natural fibres and natural dyes and exploring their value addition and utilization in the handloom sector. The programme brought together scientists, researchers, representatives of the Weavers Service Centre and stakeholders associated with the handloom sector.

The programme commenced with an overview of the activities and research initiatives of the Extension Division, ICFRE-Forest Research Institute (FRI), Dehradun. Dr. Charan Singh, Scientist-G and Head, Extension Division, FRI, gave a brief account of the various extension activities being undertaken by the Institute and highlighted important research technologies developed in the field of forestry. He particularly emphasized technologies related to natural fibres and natural dyes, their potential sources from forest-based biomass, and the possibilities for their utilization and value addition in the handloom sector. He highlighted that appropriate technological interventions can help convert locally available forest resources into value-added products, thereby contributing to livelihood generation and sustainable rural development.

The conference was inaugurated by the Chief Guste, Ms. Richa Misra, IFS, Director, ICFRE-Forest Research Institute, Dehradun.In her inaugural address, Ms. Misra emphasized the importance of forest biomass as a sustainable source of natural fibres and natural dyes. She highlighted the need for greater utilization of these renewable resources in the handloom sector through appropriate processing, value addition, innovation and market-oriented approaches. She also emphasized the potential of forest-based raw materials to support sustainable livelihoods while promoting environmentally friendly alternatives to synthetic fibres and chemical dyes.

Mr. Tapan Sharma, Deputy Director, Weavers Service Centre, Chamoli, shared information about the activities and services being provided by the Centre for the benefit of weavers and other stakeholders of the handloom sector. He highlighted the role of the Weavers Service Centre in providing technical support, capacity building, design development, skill enhancement and other services to weavers. He also discussed the scope for collaboration with forestry institutions for promoting forest-based natural fibres and dyes in handloom products.

An interactive discussion between the scientists Dr. V. K. Varshney, Dr. S. S. Bisht, Dr. Anita Tomar and Dr. Devendra Kumar of FRI and representatives/weavers of the handloom sector subsequently held. Various issues related to the availability, processing, quality, standardization and utilization of natural fibres and natural dyes with marketing issues were discussed. The

participants also deliberated on possibilities of value addition, product diversification, improved designs, technological interventions and market linkages for enhancing the economic value of forest-based natural fibre and dye products.The seminar emphasized that forest-based natural fibres and natural dyes can serve as an important link between sustainable forest resource utilization, green enterprise development, traditional handloom practices and rural livelihood generation, contributing to the vision of a sustainable and self-reliant India. The conference was also graced with the presence of Mr. D. P. Khali, Group Coordinator Research of the institute.

Total 50 participants including officers, scientists, staff of ICFRE and FRI, other institutes of ICFRE, students, entrepreneurs, representative of NGOs, SHGs, weaver's group, etc attended the virtual seminar.

The seminar concluded with a commitment to strengthen collaboration among FRI scientists, the Weavers Service Centre, Chamoli, weavers and other stakeholders for further research, technology transfer, value addition and promotion of forest-based natural fibre and natural dye-led handloom innovations.

A joint team of FRI, Dehradun including scientists DR. V. K. Varshney, Dr. Charan Singh, Dr. S. S. Bisht, Dr. Anita Tomar and Dr. Devendra Kumar with active support of staff did a commendable work to make the conference a great success.